शालोम!

परमेश्वर की कृपा से हम एक और दिन देखने के लिए जीवित हैं। बहुतों को आज यह अवसर नहीं मिला, इसलिए हम धन्यवाद करें। अब हम परमेश्वर के वचन की ओर ध्यान दें — जो हमारे आत्मा का सच्चा आहार है।

1. शैतान — वह पुराना सर्प

बाइबल शैतान को “पुराना सर्प” कहती है, जिससे उसकी प्राचीनता और छलपूर्ण स्वभाव दोनों प्रकट होते हैं।

प्रकाशितवाक्य 20:1–2
“फिर मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा। उसके पास अथाह गड्ढे की चाबी और एक बड़ी जंजीर थी। उसने अजगर को, उस पुराने सर्प को, जो शैतान और इब्लीस है, पकड़ लिया और उसे
हज़ार वर्षों के लिए बाँध दिया।”

यह उपाधि “पुराना सर्प” हमें उत्पत्ति 3 तक ले जाती है, जहाँ शैतान ने हव्वा को धोखा देने के लिए सर्प का रूप धारण किया था।

उत्पत्ति 3:1
“अब सर्प यहोवा परमेश्वर की बनाई हुई सब जंगली जानवरों में सबसे चतुर था…”

एदन की वाटिका से लेकर युग के अंत तक, शैतान ने छल को ही अपना सबसे बड़ा हथियार बनाया है। उसकी चालाकियाँ आज भी वैसी ही हैं, क्योंकि वह मनुष्य की कमजोरी को गहराई से जानता है।

2. वह मनुष्य के स्वभाव को भली-भाँति जानता है

शैतान सृष्टि से ही मनुष्य का अध्ययन कर रहा है। वह हमारी इच्छाओं, स्वभाव और कमजोरियों को अच्छी तरह पहचानता है।
वह आदम और हव्वा को जानता था। उसने नूह को जहाज़ बनाते देखा, अब्राहम और सारा के संघर्षों को देखा, मूसा की झिझक और एलिय्याह की निराशा को याद रखता है — और सबसे बढ़कर, वह यीशु मसीह को भी जानता है।

उसने स्वयं यीशु को परखने का प्रयास किया:

मत्ती 4:1
“तब पवित्र आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि शैतान उसकी परीक्षा ले।”

शैतान आज भी यीशु के जीवन, क्रूस पर मृत्यु और पुनरुत्थान के हर क्षण को याद करता है — और जानता है कि उसकी हार निश्चित हो चुकी है।

कुलुस्सियों 2:15
“उसने शासकों और अधिकारियों को निरस्त्र कर दिया और उन्हें सबके सामने दिखाकर, क्रूस के द्वारा उन पर जय पाई।”

वह हर पीढ़ी को जानता है — कौन सी बात उन्हें आकर्षित करती है, क्या उन्हें कमजोर बनाती है, और कैसे उन्हें फँसाया जा सकता है।

3. वह अपने अनुभव का उपयोग छल के लिए करता है

शैतान आत्मिक शत्रु है। वह मनुष्यों की तरह बूढ़ा नहीं होता, लेकिन उसका अनुभव निरंतर बढ़ता रहता है।
जैसे वृद्ध व्यक्ति अपने अनुभव से बुद्धिमान होते हैं, वैसे ही

शैतान की “पुरानी” अवस्था उसकी दुष्ट बुद्धि का प्रतीक है।

2 कुरिन्थियों 2:11
“ताकि शैतान हम पर हावी न हो सके, क्योंकि हम उसकी योजनाओं
से अनजान नहीं हैं।”

वह भली-भाँति जानता है कि आत्मिक रूप से अपरिपक्व लोगों को कैसे फँसाना है — विशेषकर तब जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के करीब आने लगता है।
वह पुराने और आजमाए हुए तरीकों का ही इस्तेमाल करता है, जो पहले की पीढ़ियों पर काम कर चुके हैं।

4. केवल अपने बल पर शैतान को नहीं हराया जा सकता

मसीह के बिना शैतान को हराने की कोशिश आत्मिक विनाश के समान है। चाहे तुम कितने भी अनुशासित या दृढ़ इच्छाशक्ति वाले क्यों न हो — शैतान ने तुमसे बेहतर लोगों को उन्हीं प्रलोभनों से गिराया है जिन पर तुम सोचते हो कि जीत पाओगे।

नीतिवचन 14:12

“कई ऐसे मार्ग हैं जो मनुष्य को ठीक लगते हैं, परन्तु उनका अन्त मृत्यु की ओर जाता है।”

यदि तुम कहते हो, “मुझे यीशु की ज़रूरत नहीं, मैं खुद पाप से बच सकता हूँ,” — तो यह एक भ्रम है।
बहुतों ने पहले यही सोचा, और शैतान ने उन्हें नष्ट कर दिया। मसीह के बिना, तुम भी उसकी सूची में एक और नाम बन जाओगे।

5. तो फिर इस प्राचीन सर्प को कौन हरा सकता है?

केवल वही जो “कालों का प्राचीन” है — अर्थात् स्वयं परमेश्वर।

दानिय्येल 7:9
“मैं देखता रहा, जब तक कि सिंहासन लगाए न गए, और कालों का प्राचीन बैठ गया…”

दानिय्येल 7:13–14
“मैंने रात के दर्शन में देखा, और मनुष्य के पुत्र के समान
एक आया, जो स्वर्ग के बादलों के साथ था… और उसे प्रभुता,

महिमा और राज्य दिया गया ताकि सब लोग, जातियाँ और भाषाएँ
उसकी सेवा करें…”

परमेश्वर की बुद्धि शैतान से कहीं ऊँची है।
वह न केवल उसकी हर योजना जानता है, बल्कि अपने विश्वासियों को उसे पहचानने और पराजित करने की समझ भी देता है।

6. मसीह हमें विजय और बुद्धि देता है

यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर हमें शैतान का सामना करने और उस पर अधिकार पाने की सामर्थ देता है।

लूका 10:19
“सुनो! मैं तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को कुचलने का और
शत्रु की सारी शक्ति पर अधिकार देता हूँ…”

यह दैवी बुद्धि उन लोगों को दी जाती है जो यहोवा से डरते हैं और उसके साथ चलते हैं।

नीतिवचन 2:6–10
“क्योंकि यहोवा ही बुद्धि देता है; उसके मुख से ज्ञान और समझ निकलती है…
तब तू धर्म और न्याय को समझेगा…
जब बुद्धि तेरे मन में प्रवेश करेगी और ज्ञान तेरे मन को प्रिय लगेगा।”

यह बुद्धि केवल यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा आती है, न कि केवल धार्मिक कर्मों या आत्म-बल से।

7. मसीह के बिना कोई नहीं जीत सकता

जो कोई मसीह से बाहर है, वह आत्मिक रूप से असुरक्षित है — चाहे वह इसे स्वीकार करे या न करे।
उद्धार के बिना कोई व्यक्ति न तो सच्ची शान्ति पा सकता है, न पाप पर विजय, और न ही संसार के दबावों का सामना कर सकता है।
उसके सारे प्रयास अंत में आत्मिक हार में बदल जाते हैं।

यूहन्ना 15:5
“क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।”

8. आज भी तुम्हारे पास आशा है

यदि तुमने अब तक पश्चाताप नहीं किया और यीशु पर विश्वास नहीं किया है, तो अब और शैतान के छल में मत फँसो।
वह शायद तुम्हें कह रहा हो, “तुम बहुत पापी हो, परमेश्वर तुम्हें क्षमा नहीं करेगा।”
पर यह वही झूठ है जो वह हजारों सालों से लोगों को सुनाता आया है।

परमेश्वर आज भी तुम्हें क्षमा करने को तैयार है, यदि तुम मन फिराओ।

यशायाह 1:18
“भले ही तुम्हारे पाप लाल रंग के हों, वे बर्फ के समान उजले
हो जाएँगे…”

1 यूहन्ना 1:9
“यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है, जो हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमें सब अधर्म से शुद्ध करेगा।”

आज ही निर्णय लो:

पाप से मुँह मोड़ो,
शराब, चुगली और व्यभिचार से दूर रहो,
और अपना जीवन पूरी तरह यीशु मसीह को सौंप दो।

तब “कालों के प्राचीन” — स्वयं परमेश्वर की बुद्धि — तुम्हारे जीवन में निवास करेगी, और तुम शैतान की चालों को पहचानकर उन पर विजय पाओगे।

अंतिम प्रेरणा

तुम अपनी शक्ति, बुद्धि या अनुशासन से शैतान को नहीं हरा सकते। पर यदि तुम मसीह में हो, तो परमेश्वर का आत्मा तुम्हें विजय दिलाएगा।

रोमियों 8:37
“परन्तु इन सब बातों में हम उससे, जिसने हमसे प्रेम किया, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।”

आज ही निर्णय लो कि तुम उसी के पक्ष में रहोगे जिसने मृत्यु, पाप

प्राचीन सर्प: शैतान को ऐसा क्यों कहा गया है?

और शैतान पर विजय पाई।

यीशु को चुनो।
परमेश्वर की बुद्धि ग्रहण करो।
उस प्राचीन सर्प पर विजय पाओ।

परमेश्वर तुम्हें बहुतायत से आशीष दे!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp